आज बचेगा जल: समाज बचेगा कल

डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरूण', सदस्य, साहित्य अकादमी
(नई दिल्ली) आवास: 74/3, न्यू नेहरू नगर, रूड़की

कहते हैं, 'जल' जीवन है । इस संसार की उत्पत्ति और प्रलय का कारण यह 'जल' ही तो है । जल-प्लावन के पश्चात् महाविनाश से उबर कर 'मनु' जब सृष्टि के सृजन में लगते हैं तब 'महाशक्ति' के रूप में 'मनु' केवल जल की ही अर्चना करते हैं –

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह !
एक पुरूष भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय-प्रवाह !!
नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था, एक सघन !
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन !!"

विश्व-काव्य 'कामायनी' की इन पंक्तियों में 'जल' को "एक तत्व" कहकर जगत की सर्वोच्च सत्ता 'ईश्वर' ही कहा गया है, क्योंकि केवल 'जल' ही तो है, जिसमें पदार्थ के 'त्रिगुण रूप' अर्थात् ठोस, तरल और वाष्प की विद्यमानता हमें प्रत्यक्ष दिखाई देती है । केवल 'जल' ही अनश्वर त्रिगुण ईश्वर का रूप सृष्टि में है, अन्य सभी पदार्थ एक या दो रूप ही ले पाते हैं ।

भारतीय समाज अध्यात्म की आधार-भूमि पर खड़ा है, इसीलिए विज्ञान को भी यदि 'अध्यात्म' के माध्यम से समझाया जाए, तो हम तुरन्त ग्रहण कर लेते हैं। 'जल' का महत्व संसार के प्रत्येक धर्म में स्वीकार किया जाना वास्तव में 'जल' की सार्वभौमिक सत्ता और उपयोगिता की स्वीकृति ही तो है। फिर यह कैसे हो गया कि जिन नदियों के तटों पर मानव-संस्कृति का विकास हुआ ; जिन सागर-तटों पर मानव ने आर्थिक समृद्धि के लिए व्यापार की गतिविधियाँ आरंभ की हों ; उन्हीं नदियों और सागर तटों की रक्षा करने की चिन्ता आज पूरे विश्व-समाज की सबसे बड़ी चिन्ता बन गई है ? जल निरन्तर घट रहा है, जनसंख्या निरन्तर बढ़ रही है। तब क्या है उपाय ? जरा देखिए यह शीर्षक और कीजिए चिन्तन ।

संसार के सारे वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि आने वाले युग में जल की इतनी कमी हो जाएगी कि 'जल के लिए युद्ध लड़े जाएँगे' और धरती पर जीवन बचा पाना कठिन हो जाएगा । यही कारण है कि मैंने भी अपने इस लेख का शीर्षक बहुत सोच कर रक्खा है - 'आज बचेगा जल : समाज बचेगा कल' यानि हमें वर्तमान में 'जल–संरक्षण' करना ही होगा अन्यथा आने वाले भविष्य में समाज भयंकर संकट झेलने को बाध्य होगा !

जल-संरक्षण: समाज का दायित्व

'जल' वस्तुत: प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान इस सृष्टि के प्राणिमात्र को मिला है । समाज 'व्यक्ति' से बनता है, अत: समाज की रक्षा का दायित्व भी मूलत: 'व्यक्ति' का ही होता है । यहाँ प्रश्न उठता है कि 'जल-संरक्षण' हो कैसे ? वैज्ञानिक तो यही बता सकता है कि बढ़ते प्रदूषण और निरन्तर किए जा रहे अपव्यय को रोककर 'जल-संरक्षण' कीजिए ; वृक्षारोपण और वर्षा-जल का संचयन करके 'जल-संरक्षण' होगा, लेकिन करेगा कौन ?

इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि जल-संरक्षण तो पूरे समाज का दायित्व है; दूसरे शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति का यानि मेरा, आपका और हम सबका नैतिक दायित्व है कि हम जहाँ भी हैं, जिस रूप में भी हैं; वहीं 'जल-संरक्षण' के प्रति जन-जागरण का संकल्प लें और पूरी निष्ठा से उसका पालन करें !

साहित्य की भूमिका

कहा जाता है – 'साहित्य समाज का दर्पण है' और कवि 'स्रष्टा' होता है यानि जैसे परमेश्वर सृष्टि रचता है; वैसे ही, कवि अर्थात् साहित्यकार भी शब्दों के माध्यम से 'सृजन' करता है ! यही कारण है कि हर युग में कवियों ने जन-जागरण का मंत्र मानव-समाज को दिया है और समाज ने उसी से प्रेरणा लेकर नव-निर्माण और उत्थान का संकल्प लेकर प्रगति की है ।

आज आवश्यकता यह है कि देश के प्रचार-तंत्र को शासन द्वारा अनिवार्य रूप से यह भूमिका दी जाए कि समाज को जगाने के लिए सभी प्रचार-माध्यम 'जल-संरक्षण' तथा 'पर्यावरण-संरक्षण' को लेकर छोटी-छोटी फिल्में दिखाएं; नए-नए आकर्षक और छोटे वाक्यों के रूप में 'नारे' (स्लोगन) समाज को दिए जाएँ, ताकि वातावरण का निर्माण हो सके ।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान एक ऐसी प्रभावी राष्ट्रीय संस्था है, जिसके समर्पित और निष्ठावान वैज्ञानिक निरन्तर जलविज्ञान के क्षेत्र में नई-नई तकनीक लाकर भूजल, वर्षाजल तथा अन्य रूपों में प्राप्त जल के संरक्षण का महत्व बता रहे हैं, लेकिन अब एक नई भूमिका 'राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान' को निभानी होगी, जो जन-जागरण और प्रचार-क्षेत्र में प्रभावी दखल से ही संभव हो सकेगी !

विगत दिनों, केन्द्रीय जल-संसाधन मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्री राम मोहन मिश्र, आई.ए.एस. की अध्यक्षता में 'वाटर फाउण्डेशन' तथा अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ ही कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं वैज्ञानिकों की एक बैठक संपन्न हुई थी, जिसमें मेरे द्वारा 'जल-संरक्षण' एवं 'जल की महत्ता' पर रचे गए दोहों तथा प्रचार-वाक्यों (स्लोगन्स) को न केवल पसन्द किया गया, बल्कि यह भी कहा गया कि इन दोहों तथा प्रचार-वाक्यों को प्रकाशित कराके जन-जन को दिया जाए । स्कूलों, धर्मशालाओं, तीर्थस्थलों तथा ऐसे स्थानों पर जहाँ भीड़ अधिक रहती हो, वहाँ इन्हें लिखवाया जाए ।

'प्रवाहिनी' सचमुच पुण्य सलिला गंगा की ही तरह 'जल-संरक्षण' के क्षेत्र में विगत वर्षों से अत्यन्त प्रभावी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है। 'प्रवाहिनी' के माध्यम से मैं अपने मन की अनुभूति समाज के प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति तक पहुँचाना चाहता हूँ कि यह मेरा पावन नैतिक दायित्व है -

"जल का अपव्यय जो करें, करते वे अपराध !
लगें पेड़, लहराएँ वन, पूरी हो जल-साध !!
जागे सकल समाज अब, जल-संरक्षण हेत !
वर्ना कल पछताएँगे, सूख जाएँगे खेत !!"